CRAFT LEGISLATION IN MAMTA KALIA'S FICTION

Anita Kumari, Dr. Rajesh Kumar Sharma
Department of Hindi, Faculty of Arts, Bhagwant University, Ajmer, Rajasthan

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान

अनीता कुमारी, डॉ. राजेश कुमार शर्मा
हिंदी विभाग, कला संकाय, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

सारांश

ममता कालिया की कहानियों और उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं का चित्रण किया गया है। ममता जी स्वयं एक कामकाजी महिला थीं। इसी कारण से, काम करते समय उन्हें जो वास्तविक संघर्ष करना पड़ा और काम के दौरान कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, उन्हें उनकी कहानियों और उपन्यासों में चित्रित किया गया है। यह अपनी संवेदी संरचना के माध्यम से दृ श्यों, कथनों और अत्यंत परिचित भावनाओं के सहारे आगे बढ़ता है। ममता कालिया आज के जीवन की अर्थहीनता को व्यंग्य नहीं, व्यंग्य के सहारे तलाशती हैं। चूँकि साहित्य की विभिन्न विधाएँ भाषा और अभिव्यक्ति की वाहक होती हैं इसलिए साहित्य और साहित्यकारों की अभिव्यक्ति का अच्छा उपयोग होता है। ममता कालिया भी इससे अछूती नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने अपने साहित्यिक अध्ययन में भाषा पदों और भाषा शैली को प्रभावी ढंग से संभाला है। अपनी रचनाओं में उन्होंने अपनी मानसिक भावनाओं को भाषा के माध्यम से ही व्यक्त किया है।

मुख्यशब्द: कविता, कहानी, दृश्यों, कथनों और अत्यंत परिचित भावना

प्रस्तावना

ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर, 1940 को वृन्दावन में हुआ। आपकी शिक्षा दिल्ली, मुम्बई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। आप कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध, कविता और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। हिन्दी कथा साहित्य के परिदृश्य पर आपकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। आप महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अंग्रेजी पत्रिका 'HINDI' की सम्पादक भी रह चुकी हैं।

आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं : 'बेघर', 'नरक–दर–नरक', 'दौड़', 'दुक्खम सुक्खम', 'सपनों की होम डिलिवरी', 'कल्चर–वल्चर' (उपन्यास)य 'छुटकारा', 'उसका यौवन', 'मुखौटा', 'जाँच अभी जारी है', 'सीट नम्बर छह', 'निर्मोही', 'प्रतिदिन', 'थोड़ा–सा प्रगतिशील', 'एक अदद औरत', 'बोलनेवाली औरत', 'पच्चीस साल की लड़की', 'खुशकिस्मत', दो खंडों में अब तक की सम्पूर्ण कहानियाँ 'ममता कालिया की कहानियाँ' (कहानी–संग्रह); A Tribute to Papa and other Poems '78', 'खाँटी घरेलू औरत', 'कितने प्रश्न करूँ', 'पचास कविताएँ' (कविता–संग्रह)य 'आप न बदलेंगे' (एकांकी–संग्रह)य 'कल परसों के बरसों', 'सफर में हमसफर', 'कितने शहरों में कितनी बार', 'अन्दाज–ए–बयाँ उर्फ रवि कथा' (संस्मरण)य 'भविष्य का स्त्री–विमर्श', 'स्त्री–विमर्श का यथार्थ', 'स्त्री–विमर्श के तेवर' (स्त्री–विमर्श)य 'महिला लेखन के सौ वर्ष' (सम्पादन)।

आप 'व्यास सम्मान', 'साहित्य भूषण सम्मान', 'यशपाल स्मृति सम्मान', 'महादेवी स्मृति पुरस्कार', 'राममनोहर लोहिया सम्मान', 'कमलेश्वर स्मृति सम्मान', 'सावित्री बाई फुले स्मृति सम्मान', 'अमृत

सम्मान', 'लमही सम्मान', 'सीता पुरस्कार' ढींगरा फैमिली फाउंडेशन, अमेरिका का 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड', 'ओ.पी. मालवीय स्मृति सम्मान' से सम्मानित की जा चुकी हैं।

कथा साहित्य में शिल्प विधान का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिल्प विधान का अर्थ होता है किसी कथा या कहानी को लिखने की कला, जिसमें पात्रों, घटनाओं, और वातावरण को संवेदनशीलता और विशेषता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह होता है कि पाठक कथा के माध्यम से पात्रों के भावनात्मक संघर्षों और उनकी विचारधारा को समझ सके।

कथा साहित्य में शिल्प विधान का उपयोग पात्रों की विविधता और गहराई को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह पाठकों को पात्रों के भावों, विचारधारा, और प्रवृत्तियों के साथ जोड़ता है और कहानी के माध्यम से उन्हें उसके संग जोड़ता है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का प्रयोग भावनात्मक और रचनात्मकता को प्रस्तुत करने के लिए होता है। उनकी कहानियों में पात्रों की भावनाओं, संघर्षों, और संवादों को समझने में आसानी होती है और पाठक को कहानी में सहजता से समाहित करने में मदद मिलती है। इसके फलस्वरूप, पाठक कहानी के पात्रों के साथ जुड़ता है और उनके संघर्षों और संवादों का हिस्सा बन जाता है।

समाप्ति से, कथा साहित्य में शिल्प विधान का उपयोग कहानी को अधिक विशेषता और भावनात्मकता के साथ प्रस्तुत करने के लिए होता है। यह पाठकों को कथा के पात्रों के साथ जोड़ता है और कहानी के संवादों को समझने में मदद करता है।

आधुनिक काल में अनेक परिवर्तनों के कारण सामाजिक संरचना में भी परिवर्तन आया। इसके तहत विवाह का स्वरूप भी बदलता गया। सबसे ज्यादा दिक्कतें वैवाहिक संबंधों में देखने को मिलती हैं। पुरुष और महिला दोनों कामकाजी हैं। घर पर एक–दूसरे को ज्यादा समय नहीं दे पाते। जिसके कारण कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं. लेखिका ममता कालिया ने अपनी कहानियों के माध्यम से वैवाहिक संबंधों में आई कड़वाहट को निम्नलिखित कारणों से संबोधित करने का प्रयास किया है। संयुक्त परिवार में संबंधों के विघटन के कारण वैवाहिक संबंध भी विखंडित एवं कटु हो गये हैं। आज पति–पत्नी के बीच आदर्शवादी रिश्ते लुप्त होते जा रहे हैं। शिक्षा प्राप्त करने के बाद महिलाओं की आधुनिक सोच महत्वाकांक्षी हो गई है। वह अपने अधिकारों, कर्तव्यों एवं भावनाओं को तर्क की कसौटी पर परखना चाहती है। वह अपने पति की आज्ञा का आँख मूँद कर पालन नहीं करती बल्कि उसके साथ वाद–विवाद और विवाद करती है। महिलाएं अब भावनात्मक स्तर की बजाय बौद्धिक स्तर पर सोचती हैं। कहा जाता है कि आज के युग में विवाह आध्यात्मिक लाभ, सामाजिक कल्याण और परोपकार की भावना से नहीं, बल्कि भौतिक समृद्धि, भावनात्मक और संवेदी संतुष्टि के लिए किया जाता है। आधुनिक मनुष्य की व्यक्तिगत हितों और लाभों के प्रति चाहत प्रबल है और ष्स्वयंष के लिए बलिदान के रूप में विवाह बंधन को निभाने की चाहत कमजोर है। पति और पत्नी दो अलग–अलग संस्थाएँ बन जाते हैं, अपने–अपने स्वार्थों में खोए रहते हैं और अपनी व्यक्तिगत खुशियों को पूरा करने के प्रयासों में एक–दूसरे को निराश करते हैं और परिणामस्वरूप रिश्ते में तनाव पैदा हो जाता है। कहानी "उनका जाना" में ममता कालिया ने लिखा है वैवाहिक संबंध. इसमें खालीपन के कारण होने वाली कड़वाहट, निराशा और अकेलेपन की पीड़ा को दिखाया गया है। समाज और परिवार के सामने पति–पत्नी एक सभ्य परिवार का उदाहरण देते नजर आते हैं। वही पति–पत्नी अकेले में

एक–दूसरे की शक्ल भी नहीं देखना चाहते। इसी कड़वाहट को लेखिका मालती जोशी ने अपनी कहानी ष्उसका जानाष् में दिखाने की भरपूर कोशिश की है। कहानी एक मध्यम वर्गीय परिवार की है. पति–पत्नी के अलावा एक बेटी और एक बेटा है। बेटी मुन्नी और बेटा मुन्ना दोनों की शादी हो चुकी है। परिवार में पिता का शासन होता है। पिता जो भी कहते हैं, परिवार के सभी सदस्य बिना किसी रोक–टोक के उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। आस–पड़ोस के सभी लोग उन्हें एक आदर्शवादी परिवार के रूप में देखते और जानते हैं। परिवार में बेटी मुन्नी और बेटा मुन्ना भी अपने माता–पिता को देखकर ऐसा महसूस करते हैं। वह दुनिया के सबसे उत्तम आदर्श माता–पिता हैं। मुन्नी अपने बड़े भाई से कहती है कि मुन्नी अपने माता–पिता की कोई भी बात नजरअंदाज नहीं करती है। वह जो भी कहता है वह उस पर विश्वास करती है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का महत्वपूर्ण स्थान है, जो उनके लेखन को अद्वितीय बनाता है। शिल्प विधान का अर्थ होता है किसी कहानी या कथा को लिखने की कला, जिसमें भावनाओं, दृश्यों, और पात्रों को एक विशेष ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का अद्वितीय प्रयोग होता है जो उनकी कहानियों को अनूठा बनाता है। उनकी कथाओं में पात्रों की विविधता, उनके विचारधारा, भावनाएं, और संवादों को उन्होंने शिल्प विधान के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इसके फलस्वरूप, पाठकों को उनकी कहानियों में अद्वितीय और गहरी रंगमंचन की अनुभूति होती है।

शिल्प विधान के उपयोग से, ममता कालिया अपनी कहानियों को विशेष रूप से रंगीन बनाती हैं। वे पात्रों की भावनाओं को समझने और पाठकों को उनसे संबंधित करने में मदद करते हैं। उनकी शैली में शिल्प विधान का उपयोग, पाठकों को कहानी के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है और उन्हें कहानी के अन्दर जीवित महसूस करता है।

समाप्ति से, ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का महत्वपूर्ण स्थान है, जो उनकी कहानियों को विशेष बनाता है। उनकी कहानियों में शिल्प विधान का प्रयोग उन्हें अद्वितीय और प्रेरणात्मक बनाता है, जिससे पाठकों को उनके लेखन से संबंधित करने का अनूठा अनुभव होता है। शिल्प विधान के माध्यम से, ममता कालिया अपनी कहानियों को अद्वितीय और संवेदनशील बनाती हैं। उनकी कहानियों में पात्रों के भावनात्मक संघर्षों, उत्तेजनाओं, और संवादों को शिल्प विधान के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसके फलस्वरूप, पाठकों को उनकी कहानियों में गहराई और भावनाओं की अधिक समझ होती है।

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का मुख्य उद्देश्य है पाठकों को कहानी के पात्रों, वातावरण, और घटनाओं के साथ जोड़ना। उनकी कहानियों में शिल्प विधान का उपयोग भावनाओं, उत्तेजनाओं, और विचारों को गहराई से व्यक्त करने में होता है। यह पाठकों को कहानी के माध्यम से उसकी गहराई को समझने और अनुभव करने में मदद करता है। शिल्प विधान के उपयोग से, पाठकों को लेखिका की दृश्य विवरण के माध्यम से कहानी को सहजता से समझने में मदद मिलती है। इसके फलस्वरूप, उनकी कहानियों में रंगमंचन और रचनात्मकता की अद्वितीयता बढ़ जाती है। ममता कालिया के उपन्यासों में शिल्प विधान का प्रयोग पात्रों की सामर्थ्य, उनके संघर्ष, और उनके विचारों को अधिक समझाने के लिए किया जाता है। उनके पात्र अद्वितीय होते हैं और उनके भावनात्मक संघर्षों का सामना करते हैं, जिससे पाठकों का सहयोग होता है और वे पात्रों के साथ जुड़ते हैं।

उनके उपन्यासों में शिल्प विधान का उपयोग पाठकों को उनकी कहानियों में अधिक जुड़ाव महसूस कराता है। यह पाठकों को कहानी के पात्रों के साथ एक संवाद बनाने और उनके संघर्षों को समझने में मदद करता है। संरचना की दृष्टि से ममता कालिया की ये कहानियाँ उस औपन्यासिक विस्तार से मुक्त हैं जिसके कारण ही कृष्णा सोबती की अनेक कहानियों को आसानी से उपन्यास मान लिया जाता रहा है। काव्य–उपकरणों के उपयोग में भी वे पर्याप्त संयत और सन्तुलित हैं। वे सीधी, अर्थगर्भी और पारदर्शी भाषा के उपयोग पर बल लेती हुई अकारण ब्योरों और स्फीति से बचती हैं। भारतीय राजनीति में कांग्रेस के वर्चस्व के टूटने और नक्सलवाद जैसी परिघटना का कोई संकेत भले ही ममता कालिया की कहानियों में न मिलता हो, जैसा वह उनके ही अन्य समकालीन अनेक कहानीकारों में आसानी से लक्षित किया जा सकता है, लेकिन फिर भी अपनी प्रकृति में वे नयी कहानी की सम्बन्ध–आधारित कहानियों की तुलना में कहीं अधिक राजनीतिक हैं। देश में बढ़ी और फैली अराजकता एवं विद्रूपताओं से सबसे अधिक गहराई से स्त्री ही प्रभावित हुई है। यह अकारण नहीं है कि उनकी भाषा में एक खास तरह की तुर्शी है जिसकी मदद से वे सामाजिक विद्रूपताओं पर व्यंग्य का बहुत सधा और सीधा उपयोग करती हैं। नयी कहानी के जिन लेखकों को ममता कालिया अपने बहुत निकट और आत्मीय पाती हैं, इसे फिर दोहराया जा सकता है, वे परसाई और अमरकान्त ही हैं। ममता कालिया के उपन्यासों में शिल्प विधान का उपयोग विशेषतः पात्रों की विविधता, उनके भावनात्मक संघर्ष, और रचनात्मक शैली को प्रकट करने के लिए किया गया है। उनके उपन्यासों में विविध पात्रों के संघर्ष, उत्तेजनाओं, और भावनाओं को शिल्प विधान के माध्यम से व्यक्त किया गया है। पात्रों की विशेष और उनकी अद्वितीयता को प्रस्तुत करने में शिल्प विधान का उपयोग होता है। इससे पाठक उनकी कथाओं में अधिक संबंधित महसूस करते हैं और कहानी के प्रति अधिक उत्साहित होते हैं। उनके उपन्यासों के माध्यम से वे न केवल कहानी को समझते हैं, बल्कि पात्रों के संघर्षों और उनके जीवन के अनुभवों से सहयोग करते हैं। इस प्रकार, ममता कालिया के उपन्यासों में शिल्प विधान का उपयोग उनकी कथाओं को अद्वितीय और संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उपसंहार

ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का उपसंहार कहता है कि उनके लेखन में पात्रों की विविधता, उनके भावनात्मक संघर्ष, और संवादों की गहराई को उन्होंने अद्वितीयता से प्रस्तुत किया है। शिल्प विधान का उपयोग करके, उन्होंने पाठकों को उनकी कहानियों में आत्मसात करने और उनके साथ जुड़ने का अवसर दिया है। पात्रों की मनोवैविक विशेषताओं के माध्यम से, वे पाठकों को उनकी कहानियों में रोमांचित करते हैं और उन्हें अपने विचारों और भावनाओं के साथ जुड़ने का अनुभव कराते हैं। इस प्रकार, शिल्प विधान का उपयोग कहानी को अधिक गहराई और अर्थ से भरा बनाता है, जिससे पाठक कहानी को अधिक रूपरेखित और संवेदनशील ढंग से समझते हैं। इस तरह, ममता कालिया के कथा साहित्य में शिल्प विधान का उपयोग उनकी कहानियों को एक अद्वितीय और प्रभावी अनुभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ममता जी की लेखन संपदा में सबसे बहुमूल्य तत्व उनका गद्य है। प्रचलित शब्दावली में इनका गद्य नौलखा है। ध्यान से देखें तो उनके गद्य की विशिष्टता उनके कथा साहित्य और कथेतर साहित्य दोनों में दिखाई देती है। खास बात यह है कि उनके गद्य की शैली दोनों विधाओं में

एक जैसी है। यहां तक कि लोगों से संवाद करते, व्याख्यान देते, साक्षात्कार देते समय उनके सामाजिक व्यवहार में भी उनकी भाषा उसी रंग में रहती है। उनके गद्य में आपको गहरी आत्मीयता की गर्माहट महसूस होगी लेकिन साथ ही तीव्र व्यंग्य की कड़वाहट का स्वाद भी मिलेगा। यह शैली अपनी रचना के पात्रों के प्रति आवश्यक लेखकीय लगाव और तटस्थता बनाए रखने से प्राप्त होती है। आगे उनकी भाषा एक दृश्य रचने पर आमादा दिखती है. उस दृश्य में यथार्थ और लोगबाग का सूक्ष्म अवलोकन होगाय पर्यावरण के अनुकूल संवाद होगा. इन सबके साथ–साथ लेखक की प्रफुल्लता, सूझबूझ और थोड़े से गुस्से का रसायन पाठक के भीतर रचना के वर्णन को पैदा करता है और उसे ऐसी ताकत देता है कि उसे मिटाना भी नामुमकिन है। यही ममता जी के गद्य की शैली है. उनके अपने हस्ताक्षर. जीवन में वह निश्चित रूप से अधिकतर मातृतुल्य हैं लेकिन लेखन में वह पूरी तरह से वैसी नहीं हैं। एक गद्य लेखक को ऐसा नहीं होना चाहिए. वह अपनी रचनाओं के क्षेत्र में भी खूब धमाल मचाती हैं. फिक्शन में भी और नॉन–फिक्शन में भी। हालाँकि, जब वह फेसबुक पर या अखबारों में किसी लेखक की किताब पर समीक्षा या आलोचना जैसा कुछ लिखती हैं, तो अपने सारे तीर अपने तरकश में रख देती हैं और तभी उनका मातृ पक्ष काम करता है।

संदर्भ

- डॉ० भारती शेल्के, साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार, पृष्ठ 14।
- ममता कालिया : सीट नंबर 6 (बातचीत बेकार है), पृष्ठ संख्या 65।
- ममता कालिया : एक पत्नी के नोट्स, पृष्ठ संख्या 31।
- ममता कालिया : दुक्खम सुक्खम, पृष्ठ संख्या 97।
- ममता कालिया : ममता कालिया की कहानियां, खंड–1, पृष्ठ संख्या 120।
- ममता कालिया : बेघर, पृष्ठ स ंख्या 84–86।
- ममता कालिया : बेघर, पृष्ठ स ंख्या 10।
- ममता कालिया : प्रतिदिन (ममता कालिया की कहानियां) खंड–1, पृष्ठ संख्या 278–79।
- ममता कालिया : उसका यौवन, पृष्ठ संख्या 121।